

ÇAT. BR. 3, 6, 1, 23. 14, 4, 2, 26. 6, 6, 1, 3, 4. KHAND. UP. 1, 10, 9. fgg. 11, 4. fgg. 5, 12, 2. तस्य मूर्धाद्वयं ÇAT. BR. 4, 4, 3, 4. फलेन्मूर्धा स्म ते सद्यः सकृन्धा DAG. 2, 21. तिस्रः पुरस्तान्मूर्धसंकितास्तच्छिरः ÇAT. BR. 13, 8, 9. आत्मानिष्कामति चनुष्टो वा मूर्ध्ना वा 14, 7, 2, 3. पाणिघ्राहं मूर्धदेशे ऽवसिञ्चति GOBH. 2, 2, 14. 3, 6. KĀTU. ÇR. 5, 3, 11. KAUC. 33. 33. 76. 78. 111. ĀÇV. GRHJ. 1, 13, 9. SUÇR. 1, 111, 5. 124, 13. R. 1, 44, 10. 63, 8. स तौ मूर्धन्युपात्राय 4, 9, 3, 13, 28. मानोन्नतेनाप्यभिवन्ध्य मूर्ध्ना RAGH. 16, 81. आ मूर्धतः VARĀH. BRH. S. 32, 10. 63, 5, 77, 2, 88, 20. KATHĀS. 61, 114, 132. पङ्के निमये करिषि भेका भवति मूर्धगः Spr. 4006. मूर्ध्नि माल्यम् H. 631. किमकारि मूर्ध्नि NAIŠH. 22, 45. तव शुश्रूषणं मूर्ध्ना करिष्यामि so v. a. hoch in Ehren halten R. 2, 32, 49. ईश्वराज्ञामादाय मूर्ध्नि KATHĀS. 34, 45. षटौ मूर्धनि (vgl. मूर्धन्य) VS. PRĀT. 1, 67. सोदीर्षो मूर्ध्निभक्तो वक्त्रमापद्य मातुः । वर्णाञ्जनपते ÇIKSHĀ 11 in Ind. St. 4, 107. P. 1, 1, 9, Sch. AV. PRĀT. 1, 22, Sch. Am Ende eines adj. comp.: अश्रममूर्धन् einen steinharten Schädel habend AIR. BR. 8, 28. द्वि° zweiköpfig AV. 8, 10, 22. पूर्वोत्तरदिश्वर्धन् VARĀH. BRH. S. 53, 51. वृकन्मूर्धन् 63, 2, 63, 5, 68, 80. PANĀT. 184, 10. त्रि° N. pr. eines Rākshasa, = त्रिशिरस् उत्तरारामाक. 32, 12. Uebertragen: दिवः RV. 1, 39, 2, 3, 2, 14. 6, 7, 1, 8, 44, 16. VS. 18, 54. दिवो मूर्धानः RV. 9, 69, 8. पर्वतस्य 7, 70, 3. अद्ययस्य 1, 80, 19. अद्ययायाः 10, 46, 3. अदित्याः VS. 4, 22. वर्षिष्ठे मूर्धन् RV. 6, 43, 31. रायः 1, 24, 5, 8, 64, 4. अहं केतुरहं मूर्धा 10, 139, 2. अहं भूयाममुत्तम आ वो मूर्धानमक्रमो 166, 3. die Āditja sind मूर्धानः त्रितीनाम् 8, 36, 13. एष वै मूर्धा य एष तपति ÇAT. BR. 13, 4, 1, 13. सर्वेषां भूतानां मूर्धा राजा भवति 14, 3, 1, 2. KAUSH. UP. 4, 3. मूर्धा विषुवान् ÇAT. BR. 12, 1, 4, 2. VS. 14, 9. TS. 2, 6, 2, 2. तस्येडु विष्वा भुवनाधि मूर्धनि वया इव रुद्रः सप्त विष्नुः RV. 6, 7, 6. पर्वतस्यास्य मूर्धनि Gipsel MBh. 3, 12283. अद्रिमूर्धनि 12, 12087. HARIV. 3877. R. GORR. 1, 69, 19. 3, 33, 35. 6, 92, 33. त्वौ मूर्धौ वह्यति — आस्रकूटः MRGH. 17. पादस्यासं कृत्वा त्रिधरगुरोर्मूर्ध्नि (zugleich Haupt) सुमेरोः Spr. 1739. गर्गरीस्तम्भमूर्धसु HARIV. 3337. शङ्कु° SÜRJAS. 7, 17, 18. शिवलिङ्गस्य मूर्धनि KATHĀS. 69, 153. 155. 71, 214. Spr. 3063. मूर्धावर्णा des penis SUÇR. 2, 148, 2. अनुभवति हि मूर्धा पादपस्तीत्रमुक्षम् Spr. 3360. तरु° VARĀH. BRH. S. 88, 45. वल्मीकमूर्धनि 34, 77. loc. und abl. an der Spitze von, im Anfang: vor; über: पञ्चस्य RV. 2, 3, 2. VS. 20, 44. भुवनस्य RV. 10, 88, 3. अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् 123, 7. 131, 1. त्वामग्निं पुष्कराद्ध्ययंवा निरमन्थत । मूर्ध्ना विश्वस्य वाधते: 6, 16, 13. अतिष्ठन्मनुनेन्द्राणां मूर्ध्नि देवपतिर्यथा MBh. 3, 2073. स राजा बुद्धिसंपन्नः परेषां मूर्ध्नि वर्तते R. 4, 28, 15. अतीत्य हि गुणान्सर्वान्स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते Spr. 3213. कुमुमस्तवकस्येव ह्यो वृत्तिर्मनास्त्विनः । मूर्ध्नि (zugleich Haupt) वा सर्वलोकास्य विशीर्यति वने वा ॥ 708. तस्यैषान्यावरोधानां मूर्ध्नि मान्या भविष्यति KATHĀS. 34, 138. न परं मुरलानां स सहे मूर्धसु चोन्नतिम् ihre Erhebung über Andere 19, 96. संग्राममूर्धनि an der Spitze der Schlacht MBh. 4, 1215. BHĀG. P. 1, 13, 30. राममूर्धनि MBh. 3, 7507. R. 3, 23, 18. KATHĀS. 48, 137. समरमूर्धनि R. 1, 22, 5. संग्राममूर्ध्नि RAGH. 9, 20. Gipsel als Bez. eines best. geistigen Zustandes (bei den Buddhisten) WASSILJEV 140. In der Geometrie Basis (Gegens. अग्र) COLEBR. Alg. 89; vielleicht ein Versehen, da मूर्धन् = अग्र und मूल der Gegensatz von diesem ist. Am Ende eines adj. comp.: ईक°, f. °मूर्ध्नि in eine Oberfläche (die des Himmels) zusammenlaufend AV. 8, 9, 15; vgl. समानमूर्ध्नि PĀR. GRHJ. 3, 3 (wo der Schol.

V. Theil.

den Āditja als Haupt versteht). त्रिम° scharfe Spitzen habend: दिव्यवः RV. 6, 46, 11. त्रिमूर्धन् Agni 1, 146, 1. Derselbe heisst शतमूर्धन् VS. 17, 71. — Vgl. द्वि°, बहु°, मक्ता°.

मूर्धन्य (von मूर्धन्: 1) adj. VOP. 7, 13. a) auf dem Schädel, Scheitel. Köpfe befindlich: अर्वात् KAUC. 124. माणि BHĀG. P. 1, 7, 55. PANĀR. 4, 1. 13. मूर्धन्यं कुरुषे सितोष्णम् so v. a. zum Kopfdiadem machen Spr. 1079. — b) aus dem Schädel kommend, im Schädel gebildet, Bez. derjenigen Laute, welche die europäischen Grammatiker cerebrale oder linguale nennen: मूर्धन्यौ षकारटकारवर्गौ RV. PRĀT. 1, 9. एषा नार्तदृश्यमूर्धन्यभावः 3, 28. VS. PRĀT. 1, 42, 78, 3, 39, 78. AV. PRĀT. 1, 22, 63, 2, 60. ÇIKSHĀ 17. P. 8, 3, 55. VOP. 1, 4, Sch. — c) der oberste, vorzüglichste: इमेव सर्वशास्त्राणां मूर्धन्यम् MADHUS. in Ind. St. 1, 20, 18. वीरु° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 26, Çl. 12. — 2) f. आ N. pr. der Mutter des Vedaçira s VP. 1, 132, N.

मूर्धन्वैत् (wie oben) P. 6, 1, 176. 1) adj. das Wort मूर्धन् enthaltend P. 4, 4, 127. TS. 2, 6, 2, 2. 5, 3, 4, 5. 8, 2. ÇAT. BR. 1, 6, 2, 12. 13, 1, 4, 13. — 2) m. N. pr. a) eines Gandharva TAITT. ĀR. 1, 9, 3. — b) eines Āṅgira rasa oder Vāmadevja, Verfassers von RV. 10, 88 (vgl. daselbst Vers 6). RV. ANUKR.

मूर्धापात (मूर्धन् + पात = विपात; m. das Zerspringen des Schädels (vgl. u. मूर्धन्) WEBER, GJOT. 111, 3.

मूर्धापाट (मूर्धन् + पि°) m. Ballen am Kopf (des Elephanten in der Brunstzeit) HALĀJ. 2, 61.

मूर्धपुष्प (मूर्धन् + पुष्प) m. Mimosa Sirissa (शिरिष) Roxb. ÇABDAM. im ÇKDR.

मूर्धरस (मूर्धन् + रस) m. Reisschleim ÇABDAM. im ÇKDR.

मूर्धवेष्टन (मूर्धन् + वे°) n. Turban H. 667. HALĀJ. 3, 10.

मूर्धात्त (मूर्धन् + अत्त) m. Scheitel: गत्वाहं (eine Schlange spricht) वेष्टयाम्येतमामूर्धात्तं महीपतिम् KATHĀS. 63, 119.

मूर्धाभिषिक्त (मूर्धन् + अ°) adj. geweiht (als Fürst), m. ein geweihter König AK. 3, 4, 24, 64. H. 690. an. 3, 20. MED. t. 233. HALĀJ. 2, 266. राज्ञो मूर्धाभिषिक्तानाम् MBh. 8, 1874. 4, 220. RAGH. 16, 81. BHĀG. P. 9, 13, 41. Vie de HIOUEN-THSANG 220. मम मूर्धाभिषिक्तस्य राजसानाम् R. GORR. 2, 33, 39. VARĀH. BRH. S. 6, 7. ein Mann aus der Kriegerkaste AK. 2, 8, 4, 1. H. an. MED. Minister TRIK. 3, 3, 177. H. an. MED. = मूर्धावसिक्त BHAR. (KSHIRASY. nach WILSON) zu AK. H. 895, v. l. JĀGŪ. 1, 91, v. l.

मूर्धाभिषेक (मूर्धन् + अ°) m. die Weihe zum Fürsten: तणभङ्गिनि ज्ञानां स्फुरिते परिचितिते । मूर्धाभिषेकः शास्यस्य रसस्यात्र विचार्यताम् ॥ RĀGA-TAR. 1, 23.

मूर्धावसिक्त (मूर्धन् + अ°) m. Bez. einer Mischlingskaste: der Sohn eines Brāhmaṇa von einer Kshatrijā H. 895. JĀGŪ. 1, 91. KULL. zu M. 11, 6. कृत्यश्चरयशिता अस्त्रधारणं च मूर्धावसिक्तानाम् UÇANAS ebend. MIT. (GILD. Bibl. No. 313) II, 27, a, 10. f. g. = मूर्धाभिषिक्त ein geweihter Fürst H. 690, Sch.

मूर्धन् m. = मूर्धन् von UÉGVAL. zu UNĀDIS. 1, 158 geschlossen aus den Reimen मूर्ध जैत्रध्वजैः, welche aber möglicher Weise ursprünglich मूर्ध जैत्रध्वजैः oder vielmehr मूर्ध जैत्रध्वजैः gelautet haben.

मूर्धा f. Sansevieria Roxburghiana Schult., Bowstring hemp AK. 2, 4.